शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 दिसंबर 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

'वीणा' में प्रकाशित समीक्षाओं का मूल्यांकन

मीना बिल्लोरे (शोधार्थी)
डॉ.पुरुषोत्तम दुबे (निर्देशक)
भाषा अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

सृजनधर्मिता की कसौटी समीक्षा है। रचनाकार अपने भावोद्रेक को अभिव्यक्त कर मुक्तहो जाता है, परंतु उस रचना की गहराई में उतरकर उसके विभिन्न आयामों को उद्घाटित करने का काम समीक्षक करता है। इस गुरुतर भार का निर्वहन करते हुए समीक्षक पाठकों के समक्ष किसी भी रचना की संपूर्ण रचना प्रक्रिया को प्रस्तुत करता है। स्वयं रचनाकार भी अपनी कृतियों की समीक्षा कर उसके अंतर्भाव को उजागर करते हैं। समीक्षा अथवा आलोचना को लोकप्रिय बनाने में पत्र-पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इनमें प्रकाशित होने वाली समीक्षाओं ने न सिर्फ नये समीक्षकों को स्थापित किया वरन नवीन लेखकों का उत्साहवर्धन भी किया है। नौ दशक से निरंतर प्रकाशित हो रही 'वीणा' पत्रिका को इस बात का श्रेय दिया जा सकता है कि उसने नये लेखकों को गढ़ने के साथ नये समीक्षकों को भी पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराये हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में 'वीणा' पत्रिका में प्रकाशित समीक्षाओं का मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है।

'वीणा' में प्रकाशित समीक्षाओं का मूल्यांकन

हिन्दी की समकालीन पत्रिकाआएं हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं के विकास और संवर्द्धन में उल्लेखनीय भूमिका निभाती रही हैं। कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध, नाटक, आलोचना, यात्रा वृत्तांत, जीवनी, आत्मकथा तथा शोध से संबंधित आलेखों का नियमित तौर पर प्रकाशन इनका मूल उद्देश्य है। भाषा, साहित्य तथा संस्कृति अध्ययन के क्षेत्र में समकालीन पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

हिंदी की समकालीन पत्रिकाएं सामाजिक व्यवस्था के लिए चतुर्थ स्तंभ का कार्य करती हैं और अपनी बात समझाने के लिए एवं अपने पक्षों में साफ सुंदर वातावरण तैयार करने में सदैव अमोघ अस्त्र का कार्य करती है। हिंदी के विविध आंदोलन और साहित्यिक प्रवृत्तियां एवं अन्य सामाजिक गतिविधियों को सक्रिय करने में हिंदी की अन्यान्य समकालीन पत्रिकाओं के साथ-साथ श्री मध्यभारत हिंदी साहित्य समिति, इन्दौर द्वारा मासिक रूप से प्रकाशित 'वीणा' पत्रिका की अग्रणी भूमिका रही है। इस पत्रिका ने अपने प्रकाशन के नौ दशक पूर्ण कर लिए हैं। इसका पहला अंक अक्टूबर 1927 में पण्डित अम्बिकादत्त त्रिपाठी के संपादन में प्रकाशित हुआ।

"पत्रकारिता साहित्य का बड़ा ही प्रतिष्ठित और दायित्वपूर्ण अंग है। यद्यपि पत्र-पत्रिकाओं का अधिकांश साहित्य स्थायी नहीं समझा जाता है किंतु बहुत्सी दृष्टियों से वह स्थायी साहित्य से भी अधिक महत्वपूर्ण होता है। हमारे नित्य-प्रति

के जीवन की जो झांकी इस साहित्य में दृष्टिगोचर होती है, वह स्थायी साहित्य में इस रूप में नहीं मिलती।''1

वीणा को प्रारंभ से ही देश के अनेक शलाका पुरुषों, चिंतकों एवं मूर्धन्य साहित्यकारों का सक्रिय सहयोग प्राप्त होता रहा है। महामना मदन मोहन मालवीय, महात्मा गांधी, डॉ..राजेंद्र प्रसाद, काका कालेलकर, डॉ..भगवानदास आदि महापुरुषों एवं देश के प्रख्यात चिंतकों जैसे जयशंकर प्रसाद, निराला, महादेवी वर्मा, हरिवंशराय बच्चन, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', सुभद्रा कुमारी चैहान, माखनलाला चतुर्वेदी, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, डॉ..नगेंद्र, गुलाब राय, प्रेमचंद, अज्ञेय, वृंदावन लाल वर्मा, डॉ..शिवमंगल सिंह 'सुमन आदि की लेखनी का प्रसाद वीणा को मिलता रहा है।

समीक्षा आधुनिक युग की सर्वाधिक सशक्त विधा है। इसने सृजित साहित्य के समान ही अपना महत्व प्रतिपादित किया है। ''सृजन और समीक्षा या समीक्षा और सृजन परस्पर अनुस्यूत होते हुए भी पृथक है, लेकिन परंपरानुबंध से असम्पृक्त भी। यही कारण है कि साहित्य और समीक्षा की प्रवृत्तियां प्रत्येक युग में समानांतर गति धारण करके विकसित होती रही हैं। ''सृजन और समीक्षा के मूल में क्रिया-प्रतिक्रिया का सिद्धांत निहित होता है।''2

किसी कृति अथवा रचना के मूल्य निर्धारण में समीक्षा का योगदान अन्यतम है। समाचार पत्रों और साहित्यिक पत्रिकाओं में समीक्षा को हमेशा ही पर्याप्त स्थान दिया जाता रहा है। 'वीणा' पत्रिका ने समीक्षा के गुरुतर दायित्व का सफलतापूर्वक निर्वहन किया है। अपने प्रारंभिक काल से ही 'वीणा' में स्वनामधन्य लेखकों द्वारा विविध विधाओं में सृजित साहित्य की समीक्षा की जाती रही है। युगीन समस्या दृष्टि कहने से जि समीक्षा दृष्टि का बोध होता है वह भी स्थिर वस्तु नहीं होती, न ही समीक्षा का मूल्य गिनकर स्थिर किए जा सकते हैं। फिर भी किसी रचना की समीक्षा करते समय आलोचक अपने समकाल को रचना में खोजने का यत्न करता है, जिससे रचना के समसामयिक अथवा प्रासंगिक होने के परिणाम निकाले जा सकते हैं।

विगत 90 वर्षों से प्रकाशित 'वीणा' की इस लम्बी कालावधि में कई-कई समीक्षाक 'वीणा' में प्रकाशित होने वाली समीक्षाओं के माध्यम से समीक्षक के रूप में सामने आए हैं। निस्संदेह समीक्षकों ने अपने समय की दृष्टि को लेकर आलोच्य कृतियों की पड़ताल की है।

कविताओं के दौर में एक समय 'नयी कविता' रचने का भी रहा है। शनैःशनैः कविताओं के पाठकों द्वारा 'नयी कविता' के प्रति अरुचि जागृत हुई। नयी कविता के प्रति इसी भ्रम धारणा के परिप्रेक्ष्य में श्रीमती उत्तरा द्वारा रचित काव्य संग्रह 'जहां से आकाश शुरू होता है' की समीक्षा में वीणा के तत्कालीन स्थायी समीक्षक निशंक कृति की समीक्षा में लिखते हैं, ''नयी कविता के उक्ताये मन को इन कविताओं को पढ़कर निश्चित रूप से कुछ शांति मिलती है और वह सामग्री भी जो कविता बनाती है याने चित्रोपमता और लयात्मकता।''3

कन्हैयालाल नंदन द्वारा संपादित 'क्या खोया, क्या पाया' (अटल बिहारी वाजपेयी: व्यक्तित्व और कविताएं) ऐसी कृति हैं, जो युगीन मूल्यों पर आधारित हैं। प्रस्तुत रचना में अटल जी द्वारा जिस साफगोई के साथ जीवन दर्शन उद्घाटित हुए हैं समीक्षक निशंक ने इसे रेखांकित करते हुए रचना के कथ्य को युगीन मूल्यों से संश्लिष्ट कर लिखा है, ''निष्ठा का

ऐसा निष्कंप दीप जो हर चुनौतियों से दो-दो हाथ करता है और आंधियों से बुझते दिये जलाते हुए उस व्यक्तित्व को हमारे सामने सजीव कर देता हे, जिसकी कथनी और करनी में भेद नजर नहीं आता, जिस आदमी ने असीमित अंधियारे में आकाश में अपने प्राणों के पंखों को तौला है, जो जड़ता को जीवन नहीं मानता, आदमी को जूझने की प्रेरणा देते हुए परिस्थितियों से लड़ते हुए एक स्वप्न के टूटने पर दूसरे स्वप्न को गढ़ने की सलाह देता है, पर साथ ही सावधान भी करता है कि आदमी कितना ही ऊंचा उठे, मनुष्यता के स्तर से न गिरे, अपने धरातल को न छोड़े अंतर्यामी से मुंह न मोड़े।'4

समकालीन साहित्य के संदर्भ में आलोचना में रुचि निरंतर कम होती जा रही है। यह भी कहा जा रहा है कि आलोचना कोई गंभीर हस्तक्षेप नहीं कर पा रही है। यह कह सकते हैं कि स्वयं रचनाएं अपनी आलोचना की कोई आवश्यकता अनुभव नहीं करतीं। उपर्युक्त मान्यताएं शायद एक सिरे से खारिज की जा सकती हैं, क्योंकि लाख चाहने के बावजूद रचनाओं की दिलचस्पी आलोचना में है और आलोचना लाख भागे उसे रचनाओं के पास रहना ही है।

रचनाएं यदि समीक्षाओं की भेंट चढ़ती हैं, तब वही रचना समीक्षा की तहजीब को आगे बढ़ाएगी जो साहित्यिक जीवन मूल्यों तथा जीवन मूल्यों के साथ-साथ समकालीनता को भी लेकर आगे बढ़ती है। ऐसी रचनाएं आलोचक को भी आलोचना विषयक दृष्टि प्रदान करती मिलेगी, जिससे जुड़कर आलोचक आलोच्य कृति में युगीन मूल्यों का अवलोकन कर कृति का सामाजिक जरूरत के हिसाब से समीक्षात्मक दोहन कर सके।

''जब एक समीक्षक किसी रचना की समीक्षा करता है तो वह भाषा, शैली, शिल्प, शब्द विन्यास के साथ रचना के वस्तु तत्व या मान तत्व की समीक्षा करता है।''5

आलोचना की प्रक्रिया में भाषा का सर्वाधिक महत्व है, आलोचक की भाषा ऐसी होनी चाहिए जो पाठकों को रचनाकार से साक्षात्कार कराती हो। प्रत्येक आलोचक की भाषा उसे चिंतन क्रम की सूचना देती है। रामचंद्र शुक्ल कली आलोचना प्रक्रिया समझने के लिए 'संश्लिष्ट चित्रण', 'लोक मंगल' आदि समझना आवश्यक है। हजारी प्रसाद द्विवेदी का प्रिय प्रयोग 'मानव की जय यात्रा' है तो अज्ञेय ने 'व्यक्तित्व की खोज' को अपनी आलोचना में स्थान दिया है। यह विशिष्ट प्रयोग आलोचना को समझने में सहायक होते हैं।

डॉ.सरोज कैलाशचंद वोरा द्वारा लिखित 'मन भावन' (काव्य संग्रह) की समीक्षा डॉ..अंजू शर्मा 'दयानंद' ने कवयित्री के आस्थावादी मनोभावों की झांकी को रेखांकित करने में कवयित्री के भावों के अनुरूप सहज एवं सरल भाषा का प्रयोग किया है।

डॉ..सतीश शुक्ला द्वारा बृजेश कानूनगो के व्यंग्य संग्रह 'सूत्रों के हवाले से' की समीक्षा के दौरान जिस समीक्षा भाषा का उपयोग किया गया है, उस भाषा के माध्यम से समीक्षा की भाषा में आलोच्य कृति का अनुसंधानपरक रूप देखने को मिलता है। आज व्यंग्य के नाम पर अनावश्यक विस्तार और व्यर्थ की किस्सागोई की जो प्रवृत्ति चली है बरअक्स इसके प्रस्तुत कृति के लेखक ने अपने शब्दों का किफायती प्रयोग और उसमें छिपी व्यापक शब्दशक्ति को अभिव्यक्त करता है। आलोचना भाषा कृति में निहित व्यंग्यों का सहारा लेकर लेखक की गुणवत्ता को प्रदर्शित करती है। ''बृजेश कानूनगो के व्यंग्य रोचक और

मारक दोनों हैं, ये व्यंग्य पाठकों के मन को बहलाने के साथ-साथ अपने आसपास के बारे में सोचने के लिए कुछ हद तक विवश करते हैं।'6

'वीणा' के जुलाई 2011 के अंक में सुनीता थत्ते द्वारा प्रतिभा राय के उपन्यास 'उसका अपना आकाश' की समीक्षा प्रकाशित हुई। उपन्यास में चरित्र नायिका के गुणों की पड़ताल करते हुए समीक्षक ने लिखा है, "ये सार्वभौमिक दिव्य गुण और उदात्त भावनाएं यथा वसुधैव कुटुम्बकम, सर्वधर्म समभाव, दयालुता, क्षमाशीलता, कर्मठता, परदुःखकातरता, सरलता, सहृदयता, सहिष्णुता, उदारता और जीजिविषा आदि गुण जो भारतीय संस्कृति के प्राण हैं, वे इस उपन्यास की नायिका स्वाहा में कूट-कूटकर भरे हैं।"7

निष्कर्ष

समीक्षा आधुनिक युग की सर्वाधिक सशक्त विधा है, जिसने सृजित साहित्य के समान ही अपना महत्व प्रतिपादित किया है। साहित्य हो या समीखा दोनों का उद्गम स्थल मानव म नही है। मानव मन का संवेदनात्मक अथवा रसात्मक अनुभूतियों का भाव प्रवण क्रिया व्यापार साहित्य है तो साहित्य में निहित संवेदनाओं की विश्लेषण प्रक्रिया समीक्षा है जो मानवीय प्रयोजनों का, दिशाओं का वास्तविक निर्धारण करती है। वीणा पत्रिका में निबंध, यात्रा वर्णन, काव्य संग्रह, व्यंग्य संग्रह, उपन्यास, कहानी संग्रह, लघु कहानी संग्रह और साहित्य से संबंधित अन्यान्य पुस्तकों की समीक्षाएं निरंतर प्रकाशित होती रही हैं। इन समीक्षकों ने पुस्तकों पर अपनी राय जाहिर करते हुए नवीन दृष्टि और शब्दावली का सृजन किया है। नवीन अर्थ दृष्टि से संपृक्त समीक्षाओं ने पाठक वर्ग तैयार करने में महती भूमिका का निर्वाह किया है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 साहित्य समीक्षा के सिद्धांत, गोविंद त्रिगुणायत एस.चंद एंड कंपनी प्रा.लि., रामनगर, नई दिल्ली
2 डॉ..वैंकट शर्मा, आधुनिक हिंदी साहित्य में समालोचना का विकास, पृष्ठ 4
3 जहां से आकाश शुरू होता है, श्रीमती उत्तरा, समीक्षक: निशंक, वीणा, मार्च 1998, पृष्ठ 61
4 'क्या खोया, क्या पाया, (अटल बिहारी वाजपेयी), संपादक कन्हैयालाल नंदन, समीक्षक: निशंक, वीणा, फरवरी अंक 200, पृष्ठ 120
5 साहित्य और भाषा, सर्जनात्मक अंतर संबंध, आलोक, रमेश दवे, वीणा, पृष्ठ 10
6 वीणा, जनवरी 2015, पृष्ठ 77
7 जीवन स्पंदन का एक स्फुलिंग, समीक्षक: सुनीता थत्ते, उपन्यास: उसका अपना आकाश, वीणा, जुलाई अंक 2011, पृष्ठ 74